एस.एस. कॉलेज जहानाबाद।

विभाग - हिन्दी

विषय:- हिन्दी रचना पत्र

वर्ग - स्नातक भाग 1

शिक्षण माध्यम- व्हाट्स एप

समय :- 11 बजे से 12 बजे तक, 13.7.2020

शिक्षक :- डॉ. रमेश शर्मा

पाठ - मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

प्रिय छात्र-छात्राएँ !

पिछली कक्षा में हमलोगों ने देखा था- मुहावरों का सामान्य परिचय, परिभाषा एवं उसकी विलक्षणता एवं प्रभावोत्पादकता। आज इसकी विशेषताओं को लक्षित किया जाएगा।

1. मुहावरे का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग नहीं। जैसे कोई कहे कि- 'पेट काटना' तो इससे कोई विलक्षण अर्थ प्रगट नहीं होता। इसके विपरीत, कोई कहे कि 'मैंने अपना पेट काटकर इस लड़के को पढ़ाया है', तो वाक्य के अर्थ में लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह को देखा जा सकता है।

2. मुहावरा अपना असली रूप कभी नहीं बदलता। तथा इसे पर्यायवाची शब्दों में नहीं अनुदित किया जा सकता है। जैसे:- 'कमर टूटना' एक मुहावरा है, लेकिन इसके स्थान पर 'कटि-भंग'- जैसा प्रयोग गलत होगा।

3. मुहावरे का शब्दार्थ की जगह पर उसका अवबोधक अर्थ ही ग्रहण किया जाता है। जैसे — 'खिचड़ी पकाना'। ये दोनों शब्द जब मुहावरे के रूप में प्रयुक्त होंगे तो इनका शब्दार्थ कोई काम न देगा। लेकिन वाक्य में इसका अवबोधक अर्थ होगा - 'गुप्त रूप से सलाह करना'।

4. मुहावरे का अर्थ प्रसंग के अनुसार होता है।
जैसे:- 'लड़ाई में खेत आना'। इसका अर्थ युद्ध में शहीद हो जाना है, न कि लड़ाई के स्थान पर किसी 'खेत' का चला आना।

5. मुहावरे भाषा की समृद्धि और सभ्यता के विकास के मापक हैं। इसकी बाहुल्यता और कमी से भाषा के बोलने वाले की भाषा निर्माण की शक्ति, सांस्कृतिक योग्यता, अध्ययन मनन, प्रसन्नता के भाव सबका एक साथ पता चलता है। जो समाज जितना अधिक व्यावहारिक, कर्मठ होगा, उसकी भाषा में मुहावरे का प्रयोग अधिक होगा।

6. समाज और देश की तरह मुहावरे भी बनते-बिगड़ते हैं। नये समाज के साथ नये मुहावरे बनते हैं। प्रचलित मुहावरों के प्रयोग से एवं इसके वैज्ञानिक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट दीखता है कि हमारे समाज और देश का कितना विकास हुआ है।

G. हिन्दी के अधिकतर मुहावरों का सम्बन्ध है— शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से होता है।

अगली कक्षा में लोकोक्तियों के प्रयोग पर चर्चा की जायेगी।

मेधा शर्मा
13.7.20